अमर उजाला

शब्द सम्मान

2019

बौद्धिक सजगता के लिए अमर उजाला को बधाई

साहित्य समाज की जीत व चुनौतियों का आईना होता है, जिसमें उसकी चिंताएं व संभावनाएं भी नजर आती हैं। इस संदर्भ में अमर उजाला का लोकतंत्र के प्रहरी की भूमिका से आगे बढ़कर शब्द साधकों का सम्मान करना अनूठी व सराहनीय पहल है। इसने मूल्यों, आचरण और संस्कृतियों को ऐसे बदलते समय में साथ लाने का काम किया है, जब क्षेत्रीय भाषाएं पिछड़ती दिख रही हैं। शब्द सम्मान से भाषाओं का सेतु मजबूत होगा।

साहित्य किसी भी समाज का जीवन-रक्त है। इसमें समाज की विजय और चुनौतियां प्रतिबिंबित होती हैं। उसकी चिंताएं और संभावनाएं भी नजर आती हैं। साहित्य व कला के संरक्षण, प्रोत्साहन और प्रसार के लिए केवल सरकार के प्रयास काफी नहीं हैं। इसके लिए समस्त समाज को आगे आना होगा। जनहितैषी पक्षों को नेतृत्व करना होगा। अमर उजाला का यह सम्मान उचित समय और विचार के साथ किया गया खरा प्रयास है। इसने भारतीय भाषाओं के साहित्य में आ रहे सर्वश्रेष्ठ को मान दिया है।

सामूहिक भारतीय बौद्धिकता ने दुनिया भर में कमाल किए हैं। हम दावा कर सकते हैं कि हमारी दर्जनों भाषाओं में सबसे समृद्ध ज्ञान का कोष मौजूद है। बौद्धिक सजगता के लिए मैं अमर उजाला और निर्णायक मंडल को बधाई देता हूं।

प्रणब मुखर्जी
पूर्व राष्ट्रपति

३१ जनवरी, २०१९ को नई दिल्ली के तीनमूर्ति सभागार में आयोजित प्रथम अमर उजाला शब्द सम्मान समारोह में

हिये तराजू तौलि के...

शब्दों की महान परंपरा के सतत सम्मान और श्रेष्ठतम सृजन को रेखांकित करने के अनिवार्य दायित्व के निर्वहन की दिशा में अमर उजाला परिवार ने 'शब्द सम्मान' के रूप में छः अलंकरणों की स्थापना का निर्णय २०१८ में लिया था। इसके तहत तय हुआ कि अमर उजाला फाउंडेशन की ओर से प्रतिवर्ष साहित्य में दो सर्वोच्च सम्मान- आकाशदीप, एक हिंदी और एक किसी अन्य भारतीय भाषा में सतत, विशिष्ट रचनात्मक योगदान के लिए पांच-पांच लाख रुपये की राशि के साथ अर्पित किए जाएंगे। इसके साथ ही, एक अलंकरण हिंदी में किसी भी लेखक की पहली कृति के लिए तय हुआ, तीन अलंकरण कथा, कविता तथा गैर-कथा श्रेणियों में वर्ष की श्रेष्ठ कृतियों को समर्पित किए गए तथा एक विशेष अलंकरण भारतीय भाषाओं में पुल बनाने वाली अनुवाद परंपरा के लिए स्थापित हुआ। इन सम्मानों में एक-एक लाख रुपये की राशि शामिल है।

२०१८ में शब्द सम्मान की गौरवपूर्ण शुरुआत हुई। सभी ने इस आयोजन को गहरी आत्मीयता दी। हमारा उत्साह बढ़ा और अब शब्द सम्मान का यह दूसरा साल है।

इस मौके पर उन तमाम शब्दशिल्पियों के प्रति हमारा कृतज्ञता भरा अभिवादन, जिन्होंने साहित्य को समृद्ध किया और अमर उजाला के इस आयोजन को सार्थकता दी है।

बधाई और नमन!

राजुल माहेश्वरी
प्रबंध निदेशक
अमर उजाला समूह

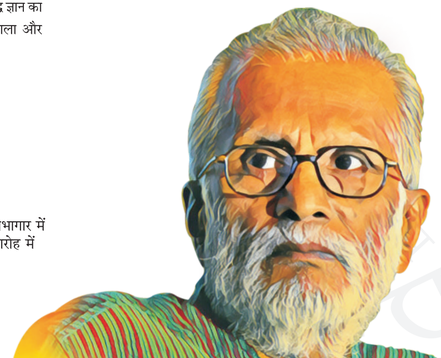

ज्ञानरंजन
आकाशदीप (2019)

भालचंद्र नेमाडे
आकाशदीप (2019)

भाषा की शक्ति उसके साहित्य से न सिर्फ समृद्ध होती है बल्कि उससे सामाजिक विवेक, सांस्कृतिक उज्ज्वलता और मानवीय मूल्यों का प्रकाश भी प्राप्त करती है।

हिंदी और समस्त भारतीय भाषाओं का साहित्य हमारे सामूहिक स्वप्न को प्रतिबिंबित करता है। भारतीय भाषाओं के सामूहिक स्वप्न के सम्मान में गत वर्ष स्थापित अमर उजाला शब्द सम्मान का गौरवपूर्ण आरम्भ समस्त भारतीय भाषाओं के मनीषियों और पाठक समाज के गहरे स्नेह का परिचायक बन गया। हिंदी के डॉ नामवरसिंह के साथ कन्नड़ के गिरीश कारनाड को समर्पित आकाशदीप ने अपनी उज्ज्वलता से सबको दीप्त कर दिया। इस वर्ष हिंदी के सर्वप्रिय रचनाकार ज्ञानरंजन और मराठी के अपूर्व साहित्यकार भालचंद्र नेमाडे को समर्पित किए जा रहे आकाशदीप ने इस दीप्ति को विलक्षण विस्तार दे दिया है। ज्ञान चतुर्वेदी, गगन गिल, सुनीता बुद्धिराजा वर्ष २०१८ की विशिष्ट रचनाओं के साथ अलंकृत हो रहे हैं और पहली किताब के साथ अम्बर पांडेय का प्रवेश हुआ है। भाषा बंधु के तहत भारतीय भाषाओं में अनुवाद की परम्परा में बांग्ला से प्रख्यात लेखक शंख घोष की कृति के अनुवाद के लिए उत्पल बैनर्जी सम्मानित हो रहे हैं। सभी के प्रति आत्मीय अभिनन्दन और अशेष शुभेच्छाएं। हर वर्ष निर्णायक मंडल बदलता है, गत वर्ष सर्वश्री विश्वनाथ त्रिपाठी, ज्ञानरंजन, सुधीश पचौरी, मंगलेश डबराल और प्रयाग शुक्ल ने श्रेष्ठ कृतियां चुनने में अमूल्य सहायता की थी, इस वर्ष सर्वश्री अब्दुल बिस्मिल्लाह, अरुण कमल, नन्दकिशोर आचार्य, ज्योतिष जोशी और सुश्री अनामिका इस उपक्रम में सहायक हुए। हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

हिंदी के बहुप्रसारित दैनिक ने भारतीय भाषाओं की सांझी देहरी पर एक दीप जलाया है। जो इस उजाले के साक्षी, सहयोगी और साझीदार हैं, उन सबके प्रति कृतज्ञता भरा अभिवादन।

यशवंत व्यास
समूह सलाहकार
अमर उजाला

नामवर सिंह
आकाशदीप (2018)

गिरीश कारनाड
आकाशदीप (2018)

अमर उजाला शब्द सम्मान 2019

निर्णायक मंडल 2019

अब्दुल बिस्मिल्लाह
प्रख्यात कथाकार

अरुण कमल
प्रख्यात कवि

अनामिका
प्रख्यात कवयित्री

नंदकिशोर आचार्य
वरिष्ठ आलोचक

ज्योतिष जोशी
वरिष्ठ आलोचक

इन शब्दशिल्पियों को वर्ष 2018 का पुरस्कार दिया गया था...

आकाशदीप : प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह और वरिष्ठ रंगकर्मी गिरीश कारनाड
छाप कथा : मनीष वैद्य | **छाप कविता :** आर. चेतनक्रांति | **छाप कथेतर :** अनिल यादव
थाप पहली किताब : प्रवीण कुमार | **भाषाबंधु** श्रेष्ठ अनुवाद : गोरख थोरात

फिर दोहराता हूं कि रचनाकार को यह नहीं देखना
चाहिए कि कोई उसे कैसे देख रहा है...

सर्वोच्च सम्मान

आकाशदीप

हिन्दी •

साथ चलती अमूर्त शक्तियां...

मैंने कभी कहा था, अब फिर दोहराता हूं कि रचनाकार को यह नहीं देखना चाहिए कि कोई उसे कैसे देख रहा है। रचनाकार के साथ अदृश्य और अमूर्त शक्तियां रहती हैं, उसका भूमिगत संसार–अन्डरवर्ल्ड बहुत बड़ा होता है।

हम मुख्यधारा में नहीं थे, एक छोटे शहर में अपना काम कर रहे थे और हमें प्रकाशित कर दिया गया। अमर उजाला द्वारा स्थापित यह 'शब्द सम्मान' सभी गैर सरकारी सम्मानों से इसलिए उच्चतर है कि वह हिन्दी के साथ दूसरी भाषाओं को भी समान दर्जा देता है। पहले हिन्दी के साथ कन्नड़ और अब हिन्दी के साथ मराठी, इस तरह दो भाषाओं के रचनाकारों को समांतर सम्मान। शुक्रिया, बहुत शुक्रिया।

ज्ञानरंजन
प्रख्यात कथाकार-संपादक

परिचय

- **जन्म :** २१ नवंबर, १९३६ अकोला, महाराष्ट्र
- हिन्दी साहित्य के शीर्षस्थ कहानीकार। 'पहल' पत्रिका के संपादक के रूप में रचनात्मकता के नए प्रतिमान। अधिसंख्य कहानियों में स्पष्ट दिखने वाली वैयक्तिकता रचनात्मकता के ही रास्ते जिस सफलता से सामाजिक हो जाती है, वह इनकी निजी और खास विशेषता।
- छह कहानी संग्रह प्रकाशित। कहानियां भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अनेक विदेशी भाषाओं में भी अनूदित। भारतीय विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त ओसाका, लंदन, सैनफ्रांसिस्को, लेनिनग्राद और हाइडेलबर्ग आदि के अनेक अध्ययन केंद्रों के पाठ्यक्रमों में भी कहानियां शामिल। सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का साहित्य भूषण सम्मान, अनिल कुमार और सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार, मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग का शिखर सम्मान सहित कई सम्मान।

जो मेरे दिल की बात है वो आपके दिल की बात भी
हो सकती है और पूरे समाज की भी...

सर्वोच्च सम्मान

आकाशदीप

• मराठी

जब लिखा सबका हो जाता है...

एक लेखक को समाज के निचले तबके और शोषित वर्ग के साथ खड़ा होना चाहिए। रेडीमेड विचारधारा की बजाय, लेखक को अपने अनुभव और अनुभूति के आधार पर खुद में अपनी एक विचारधारा निकालनी चाहिए। हमारी पहली जिम्मेदारी शोषित और वंचित के प्रति है। मेरे लेखन में वही है।

हम समाज के लिए लिखते हैं। जो मेरे दिल की बात है वो आपके दिल की बात भी हो सकती है और पूरे समाज की भी। जब लोग पढ़ना शुरु करते हैं और समझ में आने लगता है तब रचना, एक आदमी की कृति नहीं रह जाती, सबकी हो जाती है।

भालचंद्र नेमाडे
विख्यात कवि-उपन्यासकार

परिचय

- **जन्म :** २७ मई,१९३८ सांगवी, जलगांव, महाराष्ट्र
- मराठी लेखक, उपन्यासकार, कवि, समीक्षक तथा शिक्षाविद। केवल २५ वर्ष की आयु में प्रकाशित 'कोसला' उपन्यास से अपार लोकप्रियता। ग्रामीण से आधुनिक परिसर तक की सामाजिक विसंगतियों को गहराई से अभिव्यक्त करने वाले मराठी साहित्य की तीन पीढ़ियों के सर्वप्रिय लेखक। औरंगाबाद, लंदन, गोआ तथा मुंबई विश्वविद्यालयों में अध्यापन।
- कई उपन्यास और कविताओं के संग्रह। उपन्यासों में हिंदू : समृद्ध जीवन का कबाड़, कोसला, बिढार, हूल, जरीला और झूल की विस्तृत चर्चा। ढेर सारे पुरस्कार, जिसमें ज्ञानपीठ, साहित्य अकादेमी पुरस्कार, पद्मश्री, कुरुंदकर पुरस्कार, कुसुमाग्रज पुरस्कार, यशवंतराव चव्हाण पुरस्कार और महाराष्ट्र फाउंडेशन का गौरव पुरस्कार शामिल हैं।

श्रेष्ठ कृति सम्मान
वर्ष 2018
छाप
उपन्यास

ज्ञान चतुर्वेदी | **पागलखाना**

शिल्प और सरोकार का आश्वस्त करता आख्यान

पागलखाना की कथावस्तु में आज के समाज और जीवन की एक गंभीर समस्या निहित है। वह समस्या है बाजारवाद। इस समस्या पर विमर्श तो बहुत हुआ, मगर कोई उल्लेखनीय रचनात्मक कृति पहली बार सामने आई है। इस कृति का शिल्प व्यंग्यात्मक है, इसलिए यह पाठक को आरम्भ से अंत तक बांधे रखने में सक्षम है।

ज्ञान चतुर्वेदी मूलतः व्यंग्यकार हैं। इन्होंने व्यंग्यपरक उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास उसी श्रृंखला की एक कड़ी है, मगर इसका स्वरूप भिन्न और नया है। वस्तुतः ज्ञान चतुर्वेदी ने इस उपन्यास में एक ऐसी फैंटेसी रची है,जो अद्भुत है। अद्भुत इसलिए कि हिंदी कथा-साहित्य में ऐसी फैंटेसी का प्रयोग संभवतः पहली बार हुआ है। कथा-साहित्य में फैंटेसी का प्रयोग यूरोप में हुआ। वहीं से फैंटेसी यहां आई, मगर उसका प्रयोग मुक्तिबोध ने अपनी कविताओं में किया। कथा-साहित्य में उतना नहीं हुआ।

'पागलखाना' एक अनूठी व्यंग्यात्मक फैंटेसी है। इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र 'बाजार' है। अन्य पात्र वे हैं जो 'बाजार' के प्रभाव में आकर इतने भयभीत हो गए हैं कि सामान्य लोग उन्हें 'पागल' समझ लेते हैं। इस अर्थ में 'पागलखाना' उपन्यास पूर्ववर्ती कथा-शिल्प को अपनाता भी है और तोड़ता भी है।

जब रचनाकार अपने समय को प्रतिबिंबित करते हुए सरोकार के प्रति निष्ठावान हो जाए तो 'पागलखाना' अपने-आप में एक बेहतरीन आख्यान का प्रतीक हो जाता है। इस तरह यह कृति नए आस्वाद और शिल्प का अनुभव खड़ा करती है।

निर्णायक वक्तव्य

अब्दुल बिस्मिल्लाह
प्रख्यात कथाकार

अमर उजाला शब्द सम्मान 2019

बाजारवाद के विरुद्ध

बाजारवाद मुझे ठीक उसी तरह डराता है, जैसा वह आजकल किसी भी समझदार शख्स को डराता होगा। बाजार जीवन के लिए बड़ा जरूरी है परंतु जीवन को जब पूर्णतः बस बाजार के लिए होना ही मान लिया जाए, तब? जब जीवन का हर भाव, पल, निर्णय, रोना, गाना, हंसना, खाना, पीना, सोना, संबंध, लोक, कला, संस्कृति, किताब तथा हर सोच बाजार ही नियंत्रित करने लगे, तब? बाजारवाद द्वारा निर्देशित यह दुनिया तब एक विराट 'पागलखाना' नहीं बन जाएगी क्या? हां, यह पागलपन ही कहलाएगा। परंतु वर्तमान समय की मुसीबत यह है कि इसी तरह के बाजारवाद को वैश्विक स्वीकृति देने के चालाक आग्रह हैं। इस विचार के विरुद्ध सोचने वालों को पागल करार दिया जा रहा है।

मैंने कुछ पात्र रचे। ये पात्र वे हैं जो बाजारवाद के विरुद्ध हैं और अपनी-अपनी तरह से बाजार के पैंतरों को पूरा समझ गए हैं। ये पात्र एक फैंटेसी में जीते हैं। उनकी अपनी दुनिया है। ये नितांत निजी-सी फैंटेसी की दुनिया के नागरिक हैं। यथार्थ के संसार के बरक्स इनको देखें तो इनकी हरकतें पागलपन के दायरे में ही आती कही जाएंगी। इस उपन्यास की दुनिया वह है जहां बाजार सर्वशक्तिमान बन चुका है (इसे अपना ही समय मान लें तो बहुत गलत नहीं कहाएगा)। इस दुनिया में इन पात्रों की नियति बस 'पागलखाना' है।

बाजारवाद इतनी तेजी से वैश्विक समाज को अपनी चपेट में ले रहा है (और हमारी आंखों के सामने रोज ही लेता जा रहा है) कि अभी जो कुछ भी मैं फैंटेसी में रचता हूं, वह कल होने तक यथार्थ बन जाता है। फैंटेसी मानो कहीं बची ही नहीं।

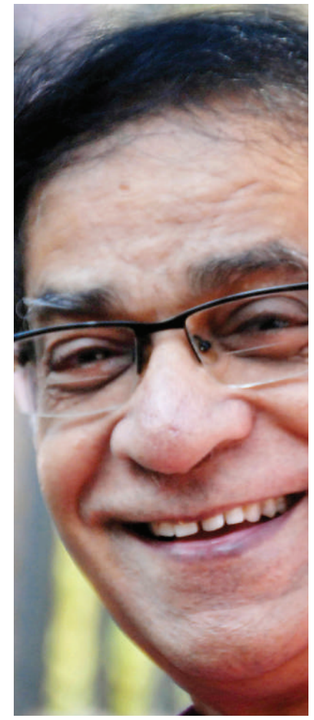

ज्ञान चतुर्वेदी

- 2 अगस्त, 1952 को जन्मे डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी की मध्य प्रदेश में ख्यात हृदयरोग विशेषज्ञ की विशिष्ट पहचान।
- लेखन की शुरुआत सत्तर के दशक में 'धर्मयुग' से।
- प्रथम उपन्यास 'नरक यात्रा' बेहद चर्चित। इसके बाद 'बारामासी' 'मरीचिका' तथा 'हम न मरब' जैसे उपन्यासों ने लोगों को आकर्षित किया।
- दस वर्षों तक 'इंडिया टुडे' तथा 'नया ज्ञानोदय' में नियमित स्तंभ। लोकमत समाचार और राजस्थान पत्रिका में भी स्तंभ लिखे। अभी तक हजार से ज्यादा व्यंग्य रचनाएं प्रकाशित।
- भारत सरकार द्वारा 2015 में पद्मश्री सम्मान, मध्य प्रदेश सरकार का राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान, दिल्ली अकादमी का अकादमी सम्मान। अन्तरराष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान तथा चकल्लस पुरस्कर।
- **सम्पर्क–** ए-40, अलकापुरी, भोपाल, मध्य प्रदेश-462024 | gyanchaturvedibpl@gmail.com

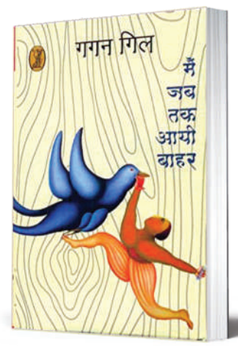

श्रेष्ठ कृति सम्मान
वर्ष 2018

छाप कविता

गगन गिल | **मैं जब तक आयी बाहर**

सृष्टि के संघर्ष और जीवट के बिम्ब

गगन गिल की कविता-पुस्तक 'मैं जब तक आयी बाहर' स्त्री-जीवन और उसके ब्याज से सम्पूर्ण मानव जीवन के दुख-सुख की मार्मिक गाथा है जिसकी नाभि में मां है, आज की नवजात और उसकी मां से लेकर पौराणिक वसु-माता और व्यापक जीव जगत की प्रतिनिधि गऊ तक। यहां एकत्र कविताएं उन्हीं के जीवन का सारांश हैं जिसे संश्लिष्ट बिम्बों और कम्पभरी लयकारी के माध्यम से अंकित किया गया है। 'तुम सूई में से निकलती हो/मैं धागे में से मां...कब उतरेंगे सितारे/ मैली अपनी चादर पर' जैसी तरल आकांक्षा से शुरू होकर यह संग्रह अंत आते-आते भयावह दुःस्वप्न पर अपनी सांस तोड़ता है-- 'मांएं पड़ी रहती हैं सोयी/सारी सृष्टि में/कोई बताता नहीं उन्हें /देवता काट ले गया/उनके शिशु का सिर'। और इस अंतराल में वह मां भी है 'जिसके थन अभी भारी थे बच्चे के दूध से, जो भाग नहीं पा रही थी ठीक से'। यह सम्पूर्ण सृष्टि के संघर्ष और जीवट के बिम्ब हैं।

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक को समाविष्ट करने की शक्ति के कारण इन कविताओं में गहन सांद्रता एवं अर्थों के अनेक भंवर हैं जो आज की कविता में विरल है। साथ ही, यहां ठोस ऐन्द्रिकता के साथ-साथ आध्यात्मिकता का पंख-स्पर्श भी है जो इस संग्रह को समकालीन काव्य-व्यवहार में सबसे पृथक और विशिष्ट बनाता है। जैसे, 'तोड़े अपने बीज खुद अपने फलों में से' एक तात्कालिक अनुभव को यथार्थेतर व्यंजना से संपन्न करता है।

गगन गिल की कविता समूची मनुष्यता की कविता है, निश्चय ही एक स्त्री कंठ में। गगन गिल ने इन दशकों में हुए परिवर्तनों को बड़ी सूक्ष्मता से दर्ज किया है, लगातार महसूस करते कि 'मैं जब तक आयी बाहर/एकान्त से अपने/बदल चुका था /रंग दुनिया का'। लेकिन इस बदलाव और भंगुरता के बावजूद, तितली के कुल नौ दिन के जीवन के बावजूद, जहान भर में उड़ती तितली' कह गयी थी मुझसे/बगीचा यूं ही रखना'। हर श्रेष्ठ कविता की तरह गगन गिल की कविता गति और स्थिरता दोनों के सहअस्तित्व की कविता है। यह संग्रह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह जीवन का प्रत्यक्षीकरण भी है और एक मंगता की प्रार्थना भीः वही दाना देना प्रभु जिस पर मेरा नाम हो।

अरुण कमल

निर्णायक वक्तव्य

अरुण कमल
प्रख्यात कवि

अमर उजाला शब्द सम्मान 2019

सब की मुट्ठी इसी तरह खाली होती होगी?

उसी ने मूक किया था, दी उसी ने वाणी

करीब 14 बरस बाद अपना संग्रह तैयार कर रही थी तो ये पंक्तियां बरबस भीतर की किसी कविता में से उठ कर मुख्य पृष्ठ पर आ गईं। मैं जैसे प्रार्थना में झुकी थी, मेरे जीवन में कविता दोबारा आने के उस क्षण।

क्या ऐसा सबके साथ होता होगा? कोई समय आता होगा, समय सब शब्द रखवा लेता होगा, दोनों हाथ खाली करवा लेता होगा? जो कुछ भी समझा था, उससे पहले तक, अर्जित किया था, वापस ले लेता होगा।

सब की मुट्ठी इसी तरह खाली होती होगी?

वे भाग्यशाली हैं जिनकी मुट्ठी कोई खाली करवा लेता है, उन्हें समय रहते पता चल जाता है, इसमें कुछ नहीं। कल्पना कीजिए, आप जीवन भर मुट्ठी बंद करके सहेजे रहें और बहुत बाद में पता चले, अरे, यह तो खाली थी!

बीहड़ में जाना, बीहड़ से लौटना। यदि कविता भी शब्द से पार जाने का स्वप्न न देखे, तो कौन देखे?

मुझे नहीं मालूम, अन्य कवि किस तरह इस जीवन से लिथड़ते हैं, किस तरह कोई मोती ढूंढते हैं। पर मुझे अच्छा लगता है जब कीचड़ में लिथड़ी मेरी पतंग आसमान में उड़ती है, और कोई उसकी डोर काट देता है, मैं रास्ता भूल जाती हूँ, अनंत के सामने निःशब्द हो जाती हूँ।

बहुत दिन होने न होने के बीच डोलती रहती हूं, न इधर न ऊपर। भाप धीरे धीरे बून्द बनती है, नीचे सीप का मुंह खुलता है। टपकने से पहले कैसा डर लगता है। जाने कहाँ गिरूँगी।

गिरने वाले के लिए कोई आश्वस्ति नहीं। एक कवि के लिए तो बिल्कुल नहीं। अभी बून्द बने थे, अब फिर से भाप बनो।

सीप का मुंह खुला रहता है। वहाँ तक पहुंचना कितना दूभर है।

भाप बनना कितना आसान, मोती बनना कितना मुश्किल।

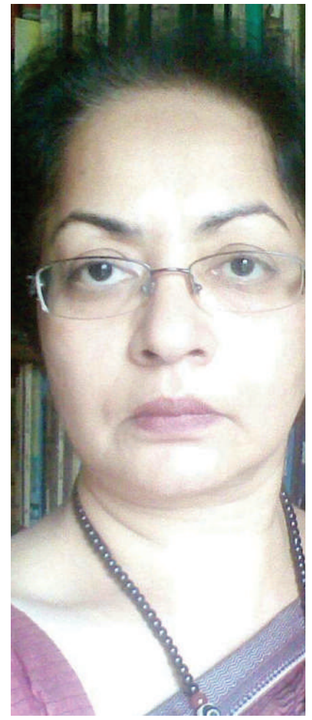

■ **गगन गिल**

- **जन्म :** 8 नवंबर 1959, नई दिल्ली।
- **प्रमुख कृतियां :** तीन दशक से ज्यादा की लंबी रचना यात्रा के दौरान कई कविता संग्रह, जिनमें 'एक दिन लौटेगी लड़की' 'अंधेरे में बुद्ध', ' यह आकांक्षा समय नहीं','थपक थपक दिल थपक थपक', ' मैं जब तक आयी बाहर', और चार गद्य पुस्तकें : दिल्ली में उनींदे, अवाक, देह की मुंडेर पर और इत्यादि। अवाक की गणना बीबीसी सर्वेक्षण के श्रेष्ठ हिन्दी यात्रा वृतांतों में की गई है। पत्रकारिता में भी रहीं।
- कई देशों की यात्राएं। ढेर सारे पुरस्कार, जिनमें भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, संस्कृति पुरस्कार, केदार सम्मान, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की ओर से नीमेन पत्रकारिता फैलोशिप, संस्कृति विभाग की सीनियर फैलोशिप हिंदी अकादमी की ओर से साहित्यकार सम्मान और द्विजदेव सम्मान उल्लेखनीय हैं।

- **संपर्क :** जी-16, ग्रांउड फ्लोर, एल्डिको ग्रीन मीडोज, सेक्टर-पाई, पॉकेट-सी, ग्रेटर नोएडा-201308 । gagangill791@hotmail.com

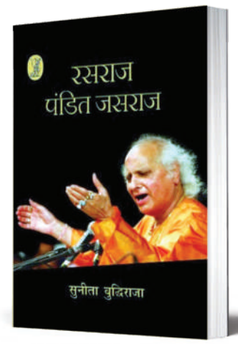

श्रेष्ठ कृति सम्मान
वर्ष 2018

छाप कथेतर

सुनीता बुद्धिराजा | रसराज पंडित जसराज

निर्णायक वक्तव्य

तथ्यों का लालित्य

हिंदी कथेतर की दुनिया प्रधानतः साहित्यालोचन की दुनिया है। कथेतर गद्य की अन्य विधाओं, ललित या व्यक्ति-व्यजंक निबंध, आत्मकथा, जीवनी, व्यंग्य, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा-वृत्त आदि से संबंधित कृतियां अत्यंत अल्प मात्रा में ही देखने को मिलती हैं और जो मिलती भी हैं, उनमें भी अधिकांशतः सपाट सूचनात्मकता ही अधिक होती हैं। ऐसी कृतियां अपवाद स्वरूप ही नजर आती हैं, जिनमें सृजनात्मकता की उपस्थिति लक्षित की जा सकती हो। कथेतर गद्य के लिए पुरस्कार के संदर्भ में विचार के लिए प्रस्तुत पुस्तकें भी मोटे तौर पर इस स्थिति की ही पुष्टि करती हैं।

लेकिन इन पुस्तकों में सुनीता बुद्धिराजा की कृति 'रसराज पंडित जसराज' इस स्थिति का एक सुखद अपवाद है। इसे हमारे समय के एक अद्वितीय गायक पंडित जसराज की जीवनी कहा जा सकता है। लेकिन जीवनियों में पाए जाने सपाट वर्णन से पूरी तरह मुक्त यह कृति मानो कई ललित कथेतर गद्य विधाओं का एक रचनात्मक संगम लगती है, जिसका गद्य अपने लालित्य के लिए अलग से ध्यान आकर्षित करता है। यह कृति पंडित जसराज के प्रारंभिक संघर्षमय जीवन और एक स्वाभिमानी किंतु विनम्र, बड़े संगीतकार की विकास यात्रा को बहुत सरस भाषा-शैली में सम्प्रेषित करती है, लेकिन उसकी भाषिक गरिमा को तनिक भी कम नहीं होने देती।

इस कृति की एक उल्लेखनीय विशेषता यह भी है कि यह पंडित जसराज के जीवन-वृत्त के साथ-साथ संगीत की समकालीन दुनिया की कई रंगतों तथा अन्य कलाकारों के साथ उनके आत्मीय संबंधों और उनके विकास में इन संबंधों के पारस्परिक रचनात्मक प्रभाव को भी रेखांकित करने में पूर्णतया सफल हैं। पुस्तक में कई स्थलों पर पंडित जसराज और उनके आत्मीय वृत्त में सम्मिलित लोगों के संस्मरणों के माध्यम से इस अप्रतिम गायक के अंतरंग संवेदनात्मक जीवन के प्रसंगों और अन्य कलाकारों के संस्मरणों को इस प्रकार पिरोया गया है कि तथ्यात्मक जीवनी होते हुए भी यह कृति पाठक के मानस पर ललित रचना जैसा प्रभाव छोड़ती है। यह कथेतर गद्य की भाषिक सृजनात्मकता का एक उत्कृष्ट रूप है।

नंदकिशोर आचार्य

नंदकिशोर आचार्य
वरिष्ठ आलोचक

अमर उजाला शब्द सम्मान 2019

शब्दों में रसधार

मैं बहुत छोटी थी, संभवतः 6-7 वर्ष की, जब हमारी मां - डॉ राज बुद्धिराजा मुझे और मेरे छोटे भाई यज्ञेश्वर को संगीत के कार्यक्रमों में ले जाती थीं। सुर कान में पड़ने लगे और धीरे-धीरे उसमें आनंद भी आने लगा। मैंने संगीत कभी औपचारिक तौर पर सीखा नहीं किंतु सभी मूर्धन्य कलाकारों को सुन-सुन कर कान सुरीले होते गये। मैं बहुत से रागों को उनकी गायन शैली के अनुसार पहचानने लगी। मां हिंदी की प्रोफेसर रहीं और लेखिका भी, अतः भाषा एवं लेखन, दोनों ही संस्कार में मिले। मुझे पढ़ने में रुचि थी और घर में बड़े-बड़े लेखकों तथा कवियों का आना-जाना था। स्वतः प्रभाव पड़ा और मैं थोड़ा-बहुत लिखने भी लगी। किंतु सबसे महत्वपूर्ण था कि मैं महसूस भी करने लगी - शब्दों को, स्वरों को। कभी शब्द मेरे मन पर अपना अतिरेक प्रभाव छोड़ जाते और कभी स्वर। कभी कुछ कविताएं या उपन्यास पढ़ कर आंखों से आंसू बहने लगते तो कभी संगीत के स्वर विचलित कर देते। ये आनंद के आंसू थे, प्रेम के आंसू थे। भाषा तो घुट्टी में मिली ही थी, बस धीरे धीरे लिखना भी शुरू कर दिया।

पंडित जसराज के साथ मेरी भेंट 1982-83 में हुई थी, अनेक बार उनके कार्यक्रमों का संचालन मैंने किया। उनके साक्षात्कारों के आधार पर मेरा एक लेख प्रकाशित हुआ था। मेरे संचालन सुन-देखकर तथा उस लंबे लेख को पढ़ कर श्रीमती मधुरा जसराज ने पंडित जसराज को सुझाव दिया कि उनकी जीवन कथा मुझे लिखनी चाहिए। पंडित जी को अपने जीवन की जैसे जब कोई घटना याद आती वे उसे मुझे सुनाते। मैं उसे रिकॉर्ड कर लेती।

पंडित शिव कुमार शर्मा ने कहा कि पंडित जसराज को मिले सभी सम्मानों में 'रसराज' सम्मान उन्हें सबसे अधिक अच्छा लगता है। बस, मुझे पुस्तक का शीर्षक भी मिल गया।

'रसराज पंडित जसराज' की रचना मेरे हाथों हुई, इसे मैं अपना सौभाग्य मानती हूं।

■ **सुनीता बुद्धिराजा**

- **जन्म :** 17 नवंबर,1954, नई दिल्ली।
- हिन्दी लेखन और कविता में एक सुपरिचित हस्ताक्षर। अब तक 11 किताबें प्रकाशित। पहला कविता संग्रह 'आधी धूप' था, जिसका तेलगु में भी अनुवाद हुआ और बहुत सराहा भी गया। 'अनुत्तर' उनकी दूसरी कविताओं की किताब। 'प्रश्न पांचाली' में महाभारत की शक्तिशाली चरित्र, द्रौपदी से जुड़ी कविताएं हैं, जिन्हें प्रसिद्ध निर्देशक दिनेश ठाकुर ने एक नाटक मंचन का रूप दिया। 'प्रश्न पांचाली' के 35 शो मुंबई, दिल्ली, अजमेर, वृंदावन, जोधपुर और लंदन में हुए। भारत के दिग्गज संगीतकारों में से उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, पंडित किशन महाराज, पं. जसराज, डॉ. एम बालमुरली कृष्ण, पं. शिव कुमार शर्मा, पं. बिरजू महाराज और पं. हरिप्रसाद चैरसिया पर विशेष काम। वयस्क शिक्षा एवं पर्यावरण पर भी किताबें लिखीं।
- कई पुरस्कार, इनमें खास तौर से उल्लेखनीय हैं शिरोमणि पुरस्कार, शिरोमणि महिला पुरस्कार, सुपर स्टार अवार्ड, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अवार्ड, पीआर पर्सन ऑफ द ईयर अवार्ड और ग्लोबल वूमन अचीवर अवार्ड।
- **सम्प्रति :** चार दशकों से बतौर एंकर और वरिष्ठ कम्युनिकेशन प्रोफेशनल के तौर पर कार्यरत। किंडलवुड कम्युनिकेशंस की संस्थापिका और मुख्य कार्यकारी अधिकारी और समय मिलते ही समाज सेवा।
- **संपर्क :** 1101 कैलिप्सो कोर्ट टॉवर-1, जे.पी. ग्रींस विश टाऊन, सेक्टर-128, नोएडा-201304 | sunitabudhiraja@yahoo.com

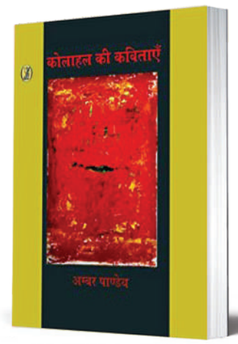

श्रेष्ठ कृति सम्मान
वर्ष 2018
थाप
पहली किताब

अंबर पाण्डेय | **कोलाहल की कविताएं**

लंबी भूख के बाद भात का स्वाद

निर्णायक वक्तव्य

अनामिका
प्रख्यात कवियित्री

को

लाहल की कविताओं की सबसे खास बात है उनका समृद्ध भाषिक अवचेतन। एक तरफ लोकाख्यान, मिथक और प्राचीन आर्षग्रंथों, रीतिग्रंथों से तन्मय अंतःसंवाद और दूसरी ओर इंटरनेटदीपित संसार की विषम और विवादी स्वरलहरियां और अन्य ध्वनियां या साउंड बाइट्स मिल-जुलकर इनकी कविताओं में एक संश्लिष्ट अर्थग्राम रचते हैं जो इतना ही बहुरंगी, बहुध्वन्यात्मक और खुला हुआ है जितना हमारा अपना वजूद, इतिहास और अपनी गंगाजमनी तहजीब।

सर्वोच्छेदन के खिलाफ रूढ़िमुक्त परम्परा की बैटरी रीचार्ज करने की धुन उत्तर-औपनिवेशिक प्रतिकार का एक आजमाया हुआ अस्त्र है- अम्बर इसे फिल्म स्टडीज के सफल प्रयोक्ता होने के नाते भी समझते हैं। मोन्ताज, फोकल शिफ्ट, जक्स्टपोजिशन, टेलिस्कोपिंग आदि तकनीकें इन्होंने इस तरह अपनी प्रेम कविताओं में बरती हैं कि बार्बी डॉल बनकर बिकने को अभिशप्त स्त्री-शरीर और परमक्लान्त, बैरागी स्त्री मन में भी स्पंदन और रसधार उमग जाए। वेश्याओं के बुखार और हर्पीज की चिंता है यहां, लंबी भूख के बाद के भात का आस्वाद भी। भाषा को भी स्त्री से एकात्म करके पढ़ता है यह नवल पुरुष, और एक सूफीमन की तरलता के साथ।

अनामिका

अमर उजाला शब्द सम्मान 2019

विस्मृति के अंधे कुएं में निर्भय

आश्चर्य नहीं कि मेरी कविताएं और गद्य का बहुत सारा भाग अतीत में विचरण करता है क्योंकि मेरे लिए वर्तमान में कविता सम्भव नहीं....मेरी कविताएं मृतकों के लिए ही हैं। उसे पढ़ते भले ही जीवित हों, लेकिन वह सम्बोधित उन्हें ही है जो लौटकर नहीं आ सकते, जो भुला दिए गए हैं। इस संवाद को सम्भव करने के लिए समकालीन भाषा मेरी बहुत काम की नहीं थी, मुझे उसे बहुत तोड़ना पड़ा। समकालीन भाषा की स्मृति बहुत कमजोर थी और स्वर्गीयों का स्मरण करने के लिए, उनसे संवाद के लिए स्मृति बहुत बलवान होनी चाहिए। मैं सिनेमा का विद्यार्थी रहा हूं। पढ़ाई के बाद मैंने देखा कि सिनेमा बनाना बहुत महंगा काम है और जो बातें मुझे सिनेमा के माध्यम से कहना है उसके लिए मुझे बहुत पैसे की जरूरत होगी। तब मैंने लिखना शुरू किया। मैं बहुत देर से लेखक बना और विस्मृति के विरुद्ध जो भाषा मुझे चाहिए थी, वह भाषा मैंने साहित्य से अर्जित नहीं की बल्कि सिनेमा से की। यही कारण है कि विस्मृति के अंधे कुएं में मैं निर्भय भ्रमण करता हूं।

भाषा और बोलियों के प्रति मेरे मन में लगभग ऐंद्रिक कामना है। मैं बहुत सी भाषाएं, बोलियां, creole और लिपियां सीखता रहता हूं, सीखना चाहता हूं। क्लासिक भाषा, स्थानीय बोलियां या राजभाषाओं में फर्क है, मेरे लिए कविता उस फर्क के अतिक्रमण का भी साधन रही है। देवताओं का creole में अचानक बोल पड़ना, subaltern का देवभाषा में संवाद करना या केवल भाषा का उपयोग करना भर मेरे लिए कविता है। मध्यकालीन कैथोलिक दार्शनिकों की तरह मैं भाषा को ईश्वर प्रदत्त भेंट भी मानता हूं और आधुनिकों की तरह सुदूर इतिहास से अब तक मनुष्यों द्वारा गढ़ा-उजाड़ा जाता अभिव्यक्ति का साधन, यह दोनों जिस गंगासागर में मिलते हैं, वहीं कविता है।

प्राचीन व्याकरणों ने शब्द ब्रह्म के विवर्त को संसार माना, मेरे निकट कविता आधी शब्द ब्रह्म में और आधी विवर्त में है। जो रचा गया है, वह टेक्स्ट तो केवल दीये की तरह है- सोने का हो, मिट्टी का, नया हो या अनेक वर्षों के उपयोग के कारण एकदम काला पड़ गया हो, क्या अंतर पड़ता है क्योंकि जब वह जलाया जाता है तब दृष्टि की ज्योति के अनुरूप ही उससे सब अपना-अपना आलोक ग्रहण करते हैं।

■ **अंबर पाण्डेय**

- **जन्म :** 15 दिसंबर,1984, इंदौर
- **कृतियां :** 'कोलाहल की कविताएं' पहली किताब। दर्शन और सिनेमा के अध्ययन में विशेष दिलचस्पी। संस्कृत, उर्दू, फ्रांसीसी, अंग्रेजी और गुजराती भाषा की जानकारी। इन सभी भाषाओं में कविताओं और कहानियों का लेखन। फिल्मों में काम किया है। फिलहाल वे सारदादेवी पर एक उपन्यास लिख रहे हैं।
- **सम्प्रति :** व्यवसाय से जुड़े हैं।
- **संपर्क :** पर्ल विला-61, भूमि इंक्लेव, सिलवर स्क्रीन फेज-1, बाईपास रोड, नायता मुंडला, इंदौर-452020
- ammberpandey@gmail.com

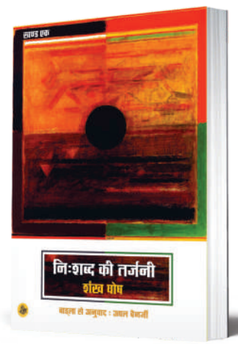

भाषाबंधु

श्रेष्ठ अनुवाद
वर्ष 2018

उत्पल बैनर्जी | **नि:शब्द की तर्जनी**
बांग्ला मूलकृति : शंख घोष

निर्णायक वक्तव्य

ज्योतिष जोशी
वरिष्ठ आलोचक

'परम' और 'नीरवता' को सुरक्षित रखते हुए

अनुवाद अपने स्वरूप में सृजनात्मक और सांस्कृतिक धर्म है। वह एक साथ मूल भाषा से स्रोत भाषा में रचना और विचार का सांस्कृतिक रूपांतरण तो है ही, उसका नव-सृजन भी है। मूल भाषा की भाषिक सहित शाब्दिक संस्कृति और उसके चिंतन को अनुवाद की भाषा में रूपांतरण के साथ-साथ उसमें इंगित पक्षों को अनुवाद की भाषा के रचाव में ऐसे बरतना, कि वह अनुवाद सर्जन का सुख दे सके, किसी भी साहित्यिक अनुवाद का सर्जनात्मक गुण होता है। इस स्तर पर प्रसिद्ध बांग्ला कवि और विचारक श्री शंख घोष की पुस्तक 'नि:शब्द की तर्जनी' का उत्पल बैनर्जी द्वारा किया गया अनुवाद श्रेष्ठ अनुवाद का उदाहरण बनकर आता है। शंख घोष श्रेष्ठतम भारतीय कवियों में एक हैं तो उत्कृष्ट चिंतक-विचारक भी। उनकी कृति 'नि:शब्द की तर्जनी' के सभी तेइस निबंधों में कवि-कर्म के प्रश्न, शब्दों की महिमा, शब्द और सत्य की समन्विति, सर्जन में ईश्वर का एक क्षण तथा रुचि की समग्रता जैसी गंभीर और शाश्वत सर्जनात्मक चिंताएं हैं। इनमें बांग्ला भाषा की सहज मधुरता, सुकर पद-विन्यास और गंभीर भावों की व्यंजना से युक्त शब्द हैं जो तत्सम पदावली में विन्यस्त हैं। उत्पल बैनर्जी के अनुवाद ने इस चुनौतीपूर्ण गद्यात्मक भाषा को उसकी पूरी सांस्कृतिकता के साथ हिंदी में संभव करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

बांग्ला से अनुवाद में संप्रेषणीय हिंदी का ध्यान रखते हुए भी उत्पल ने 'परम' और 'नीरवता' को सुरक्षित रखते हुए जहां अनुवाद के ध्येय की रक्षा की है, वहीं बांग्ला और हिंदी के सामासिक तथा सांस्कृतिक संबंध के सूत्र को सहेज कर रखा है। हमें पूरा भरोसा है कि 'नि:शब्द की तर्जनी' का बांग्ला से हिंदी में यह अनुवाद भारतीय भाषाओं की बंधुता को बढ़ाएगा और बांग्ला की ही तरह इसका हिंदी में स्वागत होगा।

ज्योतिष जोशी

अमर उजाला शब्द सम्मान 2019

मूल आत्मा की दीप्ति

शंख घोष इस समय बंगाल के सबसे अधिक समादृत और चर्चित कवि हैं। हिन्दी तथा कुछ हद तक अन्य भाषाओं में भी उन्हें चाव से पढ़ा जाता रहा है। लेकिन इससे भी चकित करने वाली बात यह है कि इस सुविख्यात कवि ने विपुल मात्रा में अनूठा गद्य लिखा है। उनका गद्य 10 खंडों में प्रकाशित है और प्रत्येक खंड हमें लेखक की गहरी संवेदनशीलता और अकूत ज्ञान से अभिभूत किए बिना नहीं रहता। वे इस समय रवीन्द्र-साहित्य के सबसे विश्वसनीय मर्मज्ञ और प्रवक्ता हैं। उनका आलोचनात्मक गद्य पढ़कर हम जान पाते हैं कि वे शीर्षस्थ कवि होने के साथ-साथ कितने प्रखर आलोचक और सच्चे अर्थों में स्कॉलर हैं। समकालीन साहित्य-जगत में उनके जैसा रचनाकार विरल ही है, लिहाजा बांग्ला से इतर भाषाओं में भी शंख घोष के गद्य पर बड़ी गंभीरता से काम करने की बहुत जरूरत है।

यह मेरी खुशकिस्मती ही है कि मुझे शंख घोष के गद्य पर काम करने का अवसर प्राप्त हो सका। उन पर काम करने का मतलब है - अपनी लघुता की धूसर अस्मिता लिए दीप्त प्रकाश के अक्षय भंडार की ओर यात्रा। शंख घोष का गद्य विषय के अनुरूप कभी अत्यंत प्रखर धारदार भाषा में मुखरित हुआ है तो कभी उसका लालित्य हमें काव्यात्मकता के आस्वाद से विभोर कर देता है। अनुवाद के दौरान कई अनूठे शब्दों से भी वास्ता पड़ा, जिन्हें लेखक ने खुद गढ़ा है। 10 खंडों में उनके आलोचनात्मक गद्य को पढ़कर हम साहित्य और कलाओं के अंतर्सम्बन्धों, साहित्य के वैश्विक परिमंडल, इस परिवर्तनशील विश्व-समाज की जटिलताओं, लेखन के प्रयोजनों तथा साहित्य के बुनियादी प्रश्नों के साथ लगातार जूझते हैं और आंतरिक समृद्धि के सोपान पार करते चलते हैं। शंख घोष जैसी श्रेष्ठ मेधा के लेखन को दूसरी भाषा में लाने के उपक्रम में सबसे बड़ी और कठिन चुनौती उनके भावजगत को समझने में आती है। अपनी सीमित क्षमताओं और छूंछे ज्ञान के साथ एक विराट चेतना को ठीक-ठीक पढ़ पाना मुझे हमेशा ही दुष्कर लगता रहा है। यह विकट सत्य है कि अनुवाद में मूल रचना का बहुत कुछ खो जाता है; लिहाजा मेरा अनुवाद भी कोई अपवाद नहीं है। लेकिन भाषा के स्तर पर मैंने यह कोशिश की है कि बांग्ला भाषा का लालित्य थोड़े अंशों में ही सही, यहां बचा रह जाए, भले ही उसका मुहावरा बदले लेकिन रचना की मूल आत्मा की दीप्ति मन्द न होने पाए। जो लोग शंख घोष की रचनाओं से परिचित हैं, वे यहां भी उनके तेवर को सुस्पष्ट रूप से देख सकेंगे। हिन्दी में उनका गद्य यदि सुधी पाठकों को जरा भी स्पर्श कर सके तो अनुवादक के लिए इससे बड़ा आत्मसंतोष और भला क्या हो सकता है!!

■ **उत्पल बैनर्जी**

- **जन्म :** 25 सितंबर, 1967, भोपाल, मध्यप्रदेश।
- कवि, अनुवादक। कविता-संग्रह 'लोहा बहुत उदास है' चर्चित। विगत कई वर्षों से बांग्ला के महत्वपूर्ण साहित्य के हिन्दी अनुवाद में संलग्न। वर्ष 2004 में अनूदित पुस्तक 'समकालीन बांग्ला प्रेम कहानियां', वर्ष 2005 में 'दंतकथा के राजा रानी' (सुनील गंगोपाध्याय की प्रतिनिधि कहानियां), 'मैंने अभी-अभी सपनों के बीज बोए थे' (स्व. सुकांत भट्टाचार्य की श्रेष्ठ कविताएं) तथा 'सुकांत कथा' (कवि सुकांत भट्टाचार्य की जीवनी) के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित। वर्ष 2007 में 'झूमरा बीबी का मेला' (रमापद चौधुरी की प्रतिनिधि कहानियों का हिन्दी अनुवाद), वर्ष 2008 बांग्ला के ख्यात लेखक श्री नृसिंहप्रसाद भादुड़ी की द्रोणाचार्य के जीवनचरित पर आधारित प्रसिद्ध पुस्तक 'द्रोणाचार्य' का अनुवाद प्रकाशित।
- संगीत तथा रूपंकर कलाओं में गहरी दिलचस्पी। मन्नू भण्डारी की कहानी पर आधारित टेलीफिल्म 'दो कलाकार' में अभिनय। कई डाक्यूमेंट्री फिल्मों के निर्माण में भिन्न-भिन्न रूपों में सहयोगी। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केंद्रों द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों के लिए आलेख लेखन।
- नार्थ कैरोलिना स्थित अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट के सलाहकार मण्डल के मानद सदस्य तथा रिसर्च फैलो।
- **सम्प्रति :** इन्दौर (मध्य प्रदेश) के डेली कॉलेज, में हिन्दी अध्यापन।
- **संपर्क :** भारती हाउस (सीनियर), डेली कॉलेज कैम्पस, इन्दौर - 452001, मध्यप्रदेश। | banerjeeutpal1@gmail.com

अमर उजाला

चीन में सुलहवार्ता टूटने का खतरा पैदा

18 अप्रैल, 1948 को प्रकाशित अमर उजाला की पहली प्रति

अमर उजाला देश के अग्रणी दैनिक समाचार पत्रों में से है। आजादी पाने के अगले साल 18 अप्रैल, 1948 को उत्तर प्रदेश के शहर आगरा से पहली बार प्रकाशित हुआ। वर्तमान में पूरे उत्तरी भारत के लोकप्रिय अमर उजाला के संस्थापक डोरीलाल अग्रवाल तथा मुरारीलाल माहेश्वरी थे। अमर उजाला के सात राज्यों और एक संघ राज्य क्षेत्र में कुल 21 संस्करण हैं। इस समाचार पत्र का विस्तार 179 जिलों में है। इंडियन रीडरशिप सर्वे के मुताबिक अमर उजाला देश के सर्वाधिक प्रसारित चार अखबारों में से एक है।

अमर उजाला शब्द सम्मान 2019

अलंकरण प्रतीक चिह्न

अनुकृति : गंगा
सेन वंश, 12वीं शताब्दी
राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में संग्रहीत

अमर उजाला फाउंडेशन
सी 21-22, सेक्टर-59, नोएडा-201301
shabdsamman.amarujala.com
shabdsamman@amarujala.com
facebook.com/AUShabdSamman shabdsamman https://www.instagram.com/shabdsamman/